बी0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर

व्याख्यान– प्रथम

भारतीय में पुनर्जागरण

चेतना का विकास–

19वीं शताब्दी में भारत में कई ऐसे सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन हुए जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की इन आंदोलनों के संचालनकर्ताओं का मानना था कि राजनीतिक जागृति के लिए सामाजिक और धार्मिक जागृति आवश्यक है तथा इन्होंने समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों तथा धार्मिक अंधविश्वासों के उन्मूलन के लिए कार्य किया। इन आंदोलनकर्ताओं ने भारतीयों में अपने गौरव पूर्ण अतीत और अपनी संस्कृति के प्रति आस्था और विश्वास भी उत्पन्न किया उनके आंदोलन से भारतीयों में बंधुत्व की भावना तथा आत्मविश्वास की प्रेरणा प्राप्त हुई और उनमें देशभक्ति तथा राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न हुई

जकारिया लिखते हैं कि भारत की पुर्नजागृति मुकता आध्यात्मिक थी और एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप धारण करने के पूर्व किसने अनेक सामाजिक और धार्मिक आंदोलन का सूत्रपात किया। इस सामाजिक तथा धार्मिक जागृति के कई कारण थे **प्रथम** ब्रिटिश सरकार किसी भी सामाजिक सुधार में रुचि नहीं रखती थी अतः भारतीयों ने इनका आरंभ और संगठन तैयार कर अंग्रेजों की **फूट डालो और राज करो नीति** का विरोध करना प्रारम्भ किया **दूसरी** तरफ देश का शिक्षित वर्ग सामाजिक तथा धार्मिक जागृति के द्वारा राष्ट्रीयता का ठोस आधार निर्मित करना चाहता था **तृतीय** राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए यह आवश्यक था कि पहले सामाजिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता की स्थापना की अधिक जरूरत है।

भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना सन 1828 ईश्वी में की वे आधुनिक भारत के निर्माता कहे जाते हैं। उन्होंने भारतीय समाज को अंधविश्वास तथा रूढ़िवादिता से मुक्त करने का कार्य किया उन्होंने भारतीयों में अपने धर्म के प्रति पुनः आस्था उत्पन्न की तथा सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए उन्होंने हिंदू समाज की कुरीतियों जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, जाति प्रथा, आादि के विरुद्ध संघर्ष किया और पाश्चात्य शिक्षा तथा ज्ञान का समर्थन किया **एनी बेसेंट लिखती हैं की राजा राममोहन राय में एक अद्भुत शक्ति, लगन, दृढ़ता थी उन्होंने साहसपूर्वक हिंदू कट्टरपंथी सीमा को तोड़ने का प्रदान किया और स्वतंत्रता का बीज बोया जिसने देश को पुष्पित पल्लवित और फलवान होकर राष्ट्र के जीवन को नवीन चेतना से अनुप्रमाणित किया।**

इसी प्रकार स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 ईस्वी में आर्य समाज की स्थापना करते हुए वैदिक संस्कृति को पुर्नजागृत किया उन्होंने समाज को संदेश दिया कि **वेदों की ओर लौटो और भारत भारतीयों के लिए** है राजा राममोहन राय की तरह ही स्वामी विवेकानंद ने भी समाज में व्याप्त जाति प्रथा सामाजिक कुरीतियों आदि का विरोध किया और नारी शिक्षा को समाज के लिए आवश्यक बताया उन्होंने **स्वराज का समर्थन** किया और अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि **विदेशी राजा कितना भी अच्छा क्यों ना हो वह स्वराज का स्थान कभी नहीं ले सकता।**

उनकी जीवनी लेखक ने लिखा है की **दयानंद का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक स्वतंत्रता था वास्तव में वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज शब्द का प्रयोग किया वह प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना सिखाया** वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया

राष्ट्रीय पुनर्जागरण के मुख्य सामाजिक सुधारक सुधारक विवेकानंद ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में 1896 में की मिशन का मुख्य कार्य सभी धर्म की आधारभूत एकता मानव मात्र की सेवा ज्ञान की महत्व और पवित्र जीवन के सिद्धांतों की स्थापना करना था इससे भारतीय समाज में जो जागृति उत्पन्न हुई स्वामी विवेकानंद स्वामी विवेकानंद चाहते थे कि भारत भौतिक क्षेत्र में भी प्रगति करें और पश्चिम से उसके विचारों का आदान–प्रदान हो भगिनी निवेदिता ने लिखा है स्वामी विवेकानंद भारत का नाम लेकर जीते थेवह मातृभूमि के अनन्य भक्त थे और उन्होंने भारतीय युवकों को उसकी पूजा करना सिखाए

मैडम प्ले वेस्ट की तथा करनाल जो कार्ड ने न्यूयॉर्क में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 में की 1879 में भारत आए और मद्रास के निकट अध्याय में इस संस्था की स्थापना की संस्था के प्रमुख विचारों को मुख्य रूप से एनी बेसेंट ने आगे बढ़ाया उन्होंने भारतीय समाज में पश्चिम के उदारवादी विचारों का सुनना किया और दलित भारतीय मानस को स्वस्थ तथा प्रन्वंत बनाने का प्रयास किया

इस प्रकार इस प्रकार उपयुक्त समस्त सामाजिक वह वह धार्मिक सुधरो ने भारतीयों में आत्मविश्वास की भावना को जागृत किया इन सुधार को में देवेंद्र नाथ टैगोर ईश्वर चंद्र विद्यासागर महर्षि पहले केशव बर्वे रानाडे आदि थे मुस्लिम समाज में जन जागृति को आगे बढ़ाने में सैयद अहमद खान का नाम अग्रणी रूप से लिया जाता है इन सुधारकों ने राष्ट्रीय आंदोलन की शक्ति को आगे बढ़ाया ए आर देसाई लिखते हैं यह आंदोलन कमोबेश मात्रा में व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सामाजिक समानता के लिए संघर्ष थे और इनका परम लक्ष्य राष्ट्रवाद था

सन्दर्भ–राजनीति विज्ञान, एस0बी0पी0डी0 प्रकाशन 3/208 आगरा – 282002

व्याख्यान– द्वितीय

राजाराम मोहन राय

राजा राममोहन राय को आधुनिक भारतीय राजनीति के व सामाजिक चिंतन का जनक कहा जाता है आधुनिक युग में जो भी सुधारवादी आंदोलन चले वह उसके प्रवर्तक के रूप में सदैव अग्रणी रहे। राजा राममोहन राय के संबंध में इंदिरा गांधी ने स्वीकार करते हुए कहा था कि राजा राममोहन राय ने हमें आधुनिकता का मार्ग दिखाया दोनों संस्कृति के सर्वप्रथम गुणों को अत्मसात किया था।

पश्चिम बंगाल में हुगली जिले के गांव राधा नगर में एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में 22 मई 1772 को इनका जन्म हुआ था उनके दादाजी कृष्ण चंद्र बनर्जी को नवाब की सेवा में रहते हुए **राय** की उपाधि मिली थी इसीलिए यह उपाधि उनके परिवार के सभी सदस्यों में नाम के रूप में जुड़ गई।

मोहन राय कर्मकांड और मूर्ति पूजा का सदैव विरोध करते रहे इस प्रकार उनके परिवार के सदस्यों ने उनसे संबंध विच्छेद कर लिया मोहन रॉय एकेश्वरवाद से बहुत प्रभावित थे। जिसका अध्ययन करने के लिए काशी में जाकर ग्रंथों का अध्ययन किया।

मोहन राय ने 20 अगस्त 1828 को अपने विचारों के प्रचार के लिए ब्रह्म समाज की स्थापना की इस संस्था के माध्यम से उदारतावाद और वैज्ञानिकतावाद का वातावरण तैयार कर इन्होंने समाज को आगे बढ़ाया।

राजा राममोहन राय की रचनाएं एवं राजनीतिक चिंतन

1–हिंदू उत्तराधिकार कानून के तहत महिलाओं के प्रति अधिकारों पर आधुनिक अतिक्रमण संबंधी संक्षिप्त टिप्पणी 1822।

2–प्रेस नियमन के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय एवं सम्राट को याचिका 1830।

3–ईसाई जनता के नाम अंतिम अपील 1823।

4–अंग्रेजी शिक्षा पर लॉर्ड एम्हर्स्ट के नाम एक पत्र 1830।

5–यूरोपवासियों को भारत में बसाने संबंधी विचार 1831।

6–भारत की न्यायिक एवं राजस्व अधिकारी पर प्रश्नोत्तर 1832।

राजाराम मोहन राय के राजनीतिक विचार

1. राजाराम मोहन राय भारतीयों के विकास के ब्रिटिश शासन को उचित मानते थे।
2. स्वतन्त्रता प्राप्ति के पक्षधर सदैव रहे।
3. विधि की सर्वोच्चता,विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए सदैव आवाज उठाते रहे।
4. नागरिकों के अधिकारों की रक्षा प्रथम प्राथमिकता थी।
5. न्यायपालिका की स्वतन्त्रता के पक्षधर रहे।
6. पंचायती व्यवस्था को पुनर्जीवित करना चाहते थे।

7. उच्च पदों पर अधिक से अधिक भारतीयों को होना चाहिए।
8. भारतीय परंपरा के अनुसार विधि निर्माण की मांग सदैव करते रहे।
9. एक व्यक्तिगत तथा राजनीतिक स्वतंत्रता संबंधी मान्यता
10. प्रेस की स्वतंत्रता पर विचार
11 .शासन का व्यापक कार्य क्षेत्र
12. न्याय के लिए आम भाषा का समर्थन
13. कानून संबंधी विचार
14. मानवता बात एवं विश्व भ्रातृत्व

सन्दर्भ–राजनीति विज्ञान, एस0बी0पी0डी0 प्रकाशन 3/208 आगरा – 282002